नमन

स्मृतिशेष डॉ. रत्नाकर पाण्डेय

राजनेता, प्रबुद्ध शिक्षक, साहित्यकार एवं हिन्दी सेवी

को

भावांजलि

"मरता है ये देह पार्थिव, यश न कभी मरता है।"

रत्नाकर पाण्डेय

जन्म
20 फरवरी, 1936

महाप्रयाण
01 सितम्बर, 2018

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नमन

स्मृतिशेष डॉ. रत्नाकर पाण्डेय

॥ प्रस्तुति ॥

प्रो0 अनिल कुमार उपाध्याय

प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष : पत्रकारिता एवं जनसंचार, विभाग, म. गां. काशी विद्यापीठ वाराणसी

॥ सम्पादक ॥

डॉ प्रभा शंकर मिश्र

(प्राध्यापक : म. गां, काशी विद्यापीठ)

एवं

आनंद चौबे

(वरिष्ठ कांग्रेस नेता)

॥ संकलनकर्ता ॥

सुमित कुमार पाण्डेय

(शोधार्थी : म. गां, काशी विद्यापीठ)

॥ मुद्रक ॥

शिखर प्रिण्टर्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रो० अनिल कुमार उपाध्याय की आदरांजलि

पूर्व सांसद राज्य सभा, हिन्दी साहित्य के पुरोधा, हिन्दी पत्रकारिता के प्रख्यात विद्वान, वक्ता एवं लेखक डाक्टर रत्नाकर पाण्डेय जी दिल्ली विश्वविद्यालय के मोतीलाल नेहरू पोस्ट ग्रेजुएट कालेज के प्राचार्य रहने के साथ ही इंदिरा गांधी व राजीव गांधी के अत्यन्त निकटस्थ थे। हिंदी सेवी डॉ० पाण्डेय जी ने तृतीय एवं चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन में सक्रिय सहयोग देने के साथ ही मैसूर हिंदी प्रचार समिति के स्वर्ण जयंती समारोह के अध्यक्ष एवं संयोजक के रूप में दिल्ली के विज्ञान भवन में एक बृहद् आयोजन करवाया था। उन्होंने विभिन्न हिन्दी आन्दोलनों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और हिंदी भाषा को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फैलाने के साथ ही राजभाषा हिंदी को पूरे भारत विशेषकर दक्षिण भारत में प्रचारित-प्रसारित करने में अग्रणी भूमिका निभाई। अपने बड़े भाई साहित्यकार एवं भाषा मर्मज्ञ पूर्व सांसद पं. सुधाकर पाण्डेय के साथ मिलकर नागरी प्रचारणी सभा का विस्तार दिल्ली व अन्य जगहों पर किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। उन्होंने साहित्यिक पत्रकारिता सहित दर्जनों पुस्तकों-पत्रिकाओं का लेखन एवं सम्पादन किया। पं. कमला पति त्रिपाठी, डॉक्टर सम्पूर्णानन्द आदि द्वारा शुरू की गयी काशी की वैचारिक परम्परा की वे अन्तिम कड़ी थे। डॉक्टर पाण्डेय के निधन से वाराणसी की राजनीति में वैचारिक शून्यता व्याप्त हो गयी है। ऐसे समय में जब चारों तरफ प्रेस एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर कुठाराघात हो रहा है और बेबाक सच बोलने वाले राजनेताओं का अभाव हो गया है, उनकी अत्यंत जरूरत थी, सहसा चले जाना कांग्रेस सहित वर्तमान राजनीति में एक बड़ी वैचारिक शून्यता पैदा करेगा। हम ऐसे प्रबुद्ध, साहसी, कर्मठ, गरीबों-मजदूरों के हित चिंतक नेता के प्रति अपनी भावांजलि अर्पित करते हैं और उनकी स्मृति को प्रणाम करते हैं। ईश्वर आपकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी : संक्षिप्त जीवन परिचय

वाराणसी, उत्तर प्रदेश में जन्मे डॉक्टर रत्नाकर पाण्डेय ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से एम०ए, पीएचडी एवं राँची विश्वविद्यालय से डी.लिट् की प्रथम उपाधि प्राप्त की। सन 1967 में मोतीलाल नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में पहले प्राध्यापक बाद में प्राचार्य बने। डॉ० पाण्डेय नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद; राष्ट्रीय हिंदी अकादमी, कोलकाता; समकालीन साहित्य सम्मेलन मुंबई, मैसूर हिंदी प्रचार परिषद, बैंगलोर; राष्ट्रीय हिंदी परिषद, मेरठ आदि अनेक शीर्ष हिंदी संस्थाओं से सर्वोच्च पदाधिकारी के रूप में सक्रियता से जुड़े थे। इंदिरा गांधी की अध्यक्षता में सन 1973 ईस्वी में विश्व स्तर पर आयोजित रामचरितमानस चतुःशती राष्ट्रीय समिति के महासचिव रहे।

आपने प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन, नागपुर और द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन, मॉरीशस में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व किया और तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन, दिल्ली के प्रचार मंत्री रहे। आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन, न्यूयॉर्क के आयोजन समिति में सक्रिय भूमिका निभाई। आप विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस की गवर्निंग काउंसिल के सदस्य भी रहे। राष्ट्रपति भवन और प्रधानमंत्री आवास से लेकर देश-विदेश में अनेकानेक ऐतिहासिक हिंदी के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों का आपने आयोजन किया। सन 1986 से 1992 तक आप राज्यसभा के मुखर सदस्य रहे और अनगिनत संसदीय समितियों के सदस्य भी थे। सन 1998 में लोकसभा का चुनाव भी वाराणसी, उत्तर प्रदेश से लड़े और पूर्वांचल के 37 लोकसभा सीटों में सर्वाधिक वोट प्राप्त करने वाले कांग्रेस प्रत्याशी थे। आप विदेश मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय तथा केंद्रीय हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य भी थे। इसके पूर्व में आप दर्जनों मंत्रालय के हिंदी परामर्शदात्री समिति के सदस्य, राजभाषा संसदीय समिति के सदस्य रहे। फ्रांस, जर्मनी, मॉरीशस, नेपाल, श्रीलंका, लंदन, आदि अनेक देशों की यात्राएं भी आपने की। आपने अपने निर्वाण से पहले 40 से भी अधिक पुस्तकों का लेखन-संपादन कर किया एवं विभिन्न प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में आपके 500 से अधिक शोध-पत्रों का प्रकाशन भी हुआ।

आत्मीय जनों की भावांजलि

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय के निधन से हम सबको गहरा दुःख पहुंचा है। मैं अपनी ओर से एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति की तरफ से रत्नाकर जी के पारिवारिक जन तथा प्रियजनों को हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

आनंद शर्मा- सांसद, सदस्य-कांग्रेस वर्किंग कमेटी

***

एक प्रसिद्ध शिक्षाविद के रूप में श्री रत्नाकर पाण्डेय जी का नाम चिरस्मरणीय रहेगा, उन्होंने सांसद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के रूप में क्षेत्रीय जनता एवं कांग्रेस संगठन में अनेक पदों पर रहते हुए पार्टी की जो सेवा की है उसे कभी भी विस्मृत नहीं किया जा सकेगा। हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह श्री रत्नाकर पाण्डेय जी की आत्मा को शांति एवं आप सभी परिवारजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

राज बब्बर- सांसद, अध्यक्ष- उ० प्र० कांग्रेस कमेटी

***

मैं आदरणीय श्री रत्नाकर पांडे जी की मृत्यु पर अपना अफसोस प्रकट करती हूं और चाहती हूं कि ईश्वर आप सब को इतनी शक्ति दे कि आप उनके दिखाए हुए रास्ते पर चल सकें। एक सांसद होने के नाते जिन जनतांत्रिक मूल्यों को उन्होंने जिया और वहां उसकी पैरवी में लड़े यह बहुत बड़ी बात है और भाषा के प्रश्न पर हिंदी को लेकर जो उन्होंने संघर्ष किया उसे अपना मुकाम दिलाने के लिए वह हम सब के लिए उदाहरण है।

चित्रा मुद्गल- प्रसिद्ध साहित्यकार

***

एक विनम्र श्रद्धांजली

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय अनंत में चले गए। उनसे मेरा अपनापे का रिश्ता था। मेरे लिए वे सिर्फ़ दीपांकर के पिता नहीं थे। वे प्रखर सांसद ,निष्ठावान कॉंग्रेसी और हिन्दी के अथक योद्धा थे। सरकारी कामकाज में हिन्दी को उसका स्थान मिले और वह राजभाषा के तौर पर प्रतिष्ठित हो इसके लिए वे आजन्म लगे रहे। सड़क से लेकर संसद तक लड़ाइयां लड़ीं। कोई तीस किताबें उन्होंने लिखी या सम्पादित की। बनारस की साहित्यिक परम्परा पर लिखी गयी उनकी किताब 'बनारस ज़िन्दा है- भारतेन्दु से रुद्र तक' अपने आप में बेजोड़ है। बनारस, साहित्य और अध्यात्म की ऐसी त्रिवेणी रचने की क्षमता उनके ही पास थी। वे लड़ाकू थे। लड़ना उनकी नियति थी। मैं कितना याद करूं कि वे किस-किस से लड़े? वे हिन्दी के लिए लड़े। वे सत्ता के लिए पं० कमलापति त्रिपाठी से लड़े। सोनिया गांधी के लिए नरसिंह राव से लड़े। वे अपनी मुराद के लिए बाबा विश्वनाथ से भी लड़ते रहते थे। देश उन्हें हिंदी के प्रचार-प्रसार के भीष्म योगदान के लिए याद रखेगा। वे देश भर में फैली हिंदी की कई संस्थाओं के प्रेरक और संरक्षक थे। विदेशों में हिंदी की लोकप्रियता का अभियान भी उन्होंने अपने कंधों पर उठाया था। वे नागरी प्रचारिणी सभा काशी, राष्ट्रीय हिंदी अकादमी कलकत्ता, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, मैसूर हिंदी प्रचार परिषद बंगलौर, समकालीन साहित्य सम्मेलन मुंबई, राष्ट्रीय हिंदी परिषद मेरठ जैसी नामी हिंदी संस्थाओं की प्रेरणा रहे। मॉरिशस में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में उन्होंने अंतराष्ट्रीय पटल पर हिंदी की लोकप्रियता की श्रीवृद्धि की। वे केंद्रीय हिंदी सलाहकार समिति, विभिन्न मंत्रालयों की हिंदी परामर्शदात्री समिति और राजभाषा संसदीय समिति के भी स्तम्भ रहे। इन भूमिकाओं में उन्होंने ये सुनिश्चित किया कि हिंदी सदैव नीति निर्धारक वर्ग की चिंता और आकर्षण का केंद्र बनी रहे। डॉ० रत्नाकर पांडेय जनसरोकारों के लिए जीने वाली शख्सियत थे। उन्होंने राजनीति को जनसेवा की साधना समझा। बतौर सांसद वे बनारस की समस्याओं के लिए हमेशा फिक्रमंद रहे। काशी उनकी रग रग में बसी थी। वे काशी हिंदू विश्वविद्यालय से पीएचडी व रांची विश्विद्यालय से डी.लिट् थे। पर उनकी उच्च शिक्षा ने उन्हें और भी विनम्र और मृदुभाषी बनाया। दिल्ली के सांसद आवास से लेकर बनारस के पुश्तैनी घर तक, उनसे कोई भी ज़रूरतमंद सहज ही मिल सकता था। उन्होंने अपने और आम जनों के बीच पद की दीवार कभी नहीं आने दी। ये उनकी बहुत बड़ी उपलब्धि थी। मेरा उनसे पारिवारिक रिश्ता भी था। मुझसे मिलते ही वे मास्टर साहब (यानी मेरे पिता जी) का हाल पूछते थे। पिता जी ने उन्हें पढ़ाया था। जब भी उनसे फोन पर बातें होतीं, वे पूरी आत्मीयता के साथ हाल चाल लेते थे। उनके जाने से बनारस में एक शून्य होगा। साहित्य में भी, राजनीति में भी। राजनीति में तो ऐसे प्रखर लोग अब होते नहीं हैं। हिन्दी को उनके मुकाम पर ले जाने की लड़ाई भी कमज़ोर होगी। मैं जब भी काशी विश्वनाथ को याद करूँगा, मुझे डॉ० रत्नाकर पाण्डेय बहुत याद आएँगे। उन्हें प्रणाम।

हेमंत शर्मा- वरिष्ठ पत्रकार व लेखक

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय काशी की विभूति थे। उनके जाने से हम सब कांग्रेस जनों ने अपना एक कद्दावर नेता खो दिया। उन की कमी आने वाले कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को हमेशा खलेगी।

राजेश पति त्रिपाठी-पूर्व एमएलसी

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी अनुकरणीय व्यक्तित्व, स्पष्ट वक्ता, निर्भीक एवं प्रखर वक्ता, हिंदी साहित्य के विद्वान थे। वाराणसी में कांग्रेस जनों के अभिभावक थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमने अपना राजनीतिक संरक्षक खो दिया है। हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि देते हैं।

डॉक्टर राजेश मिश्रा- पूर्व सांसद वाराणसी

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी प्रखर सांसद एवं अच्छे वक्ता थे। भारतीय संसद में 90 के दशक में उनकी आवाज ऊंची थी। काशी सहित पूर्वांचल की विभिन्न आर्थिक सामाजिक समस्याओं को वह संसद में उठाते रहते थे। डाला-चुर्क सीमेंट फैक्ट्रियों के मजदूरों की लड़ाई उन्होंने लड़ी थी। वह एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, व्यवहार कुशल, मित्रों के मित्र थे। हिंदी साहित्य एवं हिंदी पत्रकारिता पर उन्होंने कई पुस्तकें लिखी थी। इंदिरा जी और राजीव गांधी के कार्यकाल में हिंदी के सम्वर्धन के लिए डॉक्टर पाण्डेय ने उल्लेखनीय कार्य किया था। तृतीय एवं चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मलेन के आयोजन में तथा भारत में राष्ट्र भाषा के प्रचार-प्रसार में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। डॉक्टर संपूर्णानंद एवं पंडित कमलापति त्रिपाठी की वैचारिक राजनीति की कड़ी में वे अंतिम व्यक्ति थे। वे प्रबुद्ध राजनेता थे। डॉक्टर पाण्डेय के निधन से न केवल काशी बल्कि उत्तर भारत में वैचारिक शून्यता की पूर्ति जल्दी संभव नहीं दिखती। मैं अपनी श्रद्धांजलि उन्हें अर्पित करता हूं।

प्रो० अनिल कुमार उपाध्याय

पूर्व विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी

***

भारतीय राजनीति के पुरोधा मूर्धन्य विद्वान आदरणीय श्री पाण्डेय जी का निधन अत्यंत दुखदाई है। हम विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और ईश्वर से उस गतात्मा को शांति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

अजय राय- पूर्व विधायक पिंडरा वाराणसी

***

डॉ रत्नाकर पाण्डेय जी प्रखर वरिष्ठ कांग्रेस नेता थे। उनके निधन से कांग्रेस को अपूरणीय क्षति हुई है। हम समस्त कांग्रेस जनों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और शोक संतप्त परिवार को इतना बड़ा कष्ट और दुख सहन करने की बाबा विश्वनाथ से प्रार्थना करते हैं।

प्रजा नाथ शर्मा- अध्यक्ष, जिला कांग्रेस कमेटी

***

एक महान और अति कर्मयोगी नेता, जो काशी की पहचान थे। दिल्ली में हमेशा काशी का प्रतिनिधित्व करते रहे दिल की गहराई से ईश्वर से नमन करते हुए बाबा विश्वनाथ एवं मां अन्नपूर्णा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और दुख की इस घड़ी में उनके परिवार को संबल प्रदान करें।

डॉ० दयाशंकर मिश्र 'दयालु'- भाजपा काशी क्षेत्र, वाराणसी

***

कांग्रेस की उदात्त परंपराओं का संवाहक आज हमारे बीच नहीं रहा। सहसा ही साहित्य जगत को सूना कर बेबाक़ राजनीतिक विचारों का अग्रदूत इस तरह शांत होगा यह कभी नहीं सोचा था। व्यक्तिगत मेरे लिए बाबू जी राजनीति के सरपरस्त रहेंगे। यह कमी हमेशा बनी रहेगी।

डॉ० प्रमोद पाण्डेय- अध्यक्ष,उ० प्र०कांग्रेस सेवादल

***

डॉ रत्नाकर पाण्डेय बेबाक़ व्यक्तित्व के धनी थे। स्वर्गीय पाण्डेय हिंदी भाषा के उन्नयन व विकास के लिए समर्पित जीवन जिए। श्री पंडित कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता थे और राज्यसभा के सदस्य के रूप में संसदीय प्रणाली में श्रेष्ठतम योगदान दिया। वह निश्छल व निर्मल मन के अप्रतिम व्यक्तित्व व विचारक थे। उनके निधन से कांग्रेस पार्टी वह हिंदी जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। भगवान भूतनाथ से प्रार्थना है कि उनको शिव सानिध्य प्राप्त हो और उनके परिजनों को इस आघात को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो। पाण्डेय जी को शत-शत नमन।

विजय शंकर पाण्डेय-पूर्व अध्यक्ष उत्तर प्रदेश सिंचाई आयोग

***

डॉ रत्नाकर पाण्डेय जी मेरे पिता स्वर्गीय राम प्रवेश चौबे के सहपाठी थे। उनके निधन से कांग्रेस के गौरवशाली परंपरा का ध्वजवाहक चला गया। विनम्र श्रद्धांजलि।

सतीश चौबे- महासचिव उत्तर प्रदेश कांग्रेस

***

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रद्धेय डॉ रत्नाकर पाण्डेय जी का निधन हमारी व्यक्तिगत क्षति है। मेरे अभिभावक के रूप में उनका संरक्षण प्राप्त होता था। उनके असामयिक निधन से मर्माहत हूँ। मैं उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

डॉ राजेश कुमार चौधरी- महासचिव, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी, सदस्य- एआईसीसी, पूर्व सदस्य-हिंदी सलाहकार समिति, इस्पात मंत्रालय भारत सरकार

***

हिंदी जगत के मूर्धन्य विद्वान एवं कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता के निधन से कांग्रेस की अपूरणीय क्षति हुई है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दें। महानगर कांग्रेस कमेटी वाराणसी की हार्दिक श्रद्धांजलि।

सीताराम केसरी- अध्यक्ष, महानगर कांग्रेस कमेटी वाराणसी

***

राजनीतिक क्षितिज के दैदीप्यमान नक्षत्र, काशी की राजनीतिक विरासत के पुरोधा, बेबाक एवं निर्भीक व्यक्तित्व के जननेता का जाना काशी और कांग्रेस दोनों के लिए अपूरणीय क्षति है। हम जैसे कार्यकर्ताओं के महान संरक्षक को शत-शत नमन एवं विनम्र श्रद्धांजलि।

बैजनाथ सिंह- पूर्व चेयरमैन, उत्तर प्रदेश कांग्रेस सूचना अधिकार प्रकोष्ठ

हमारे जनपद चंदौली विधानसभा क्षेत्र शहाबगंज ग्राम दरियापुर निवासी आदरणीय पाण्डेय जी (हमारे गांव भूसी से 3 किलोमीटर पूरब के) पड़ोसी थे हम लोगों को निधन का समाचार मिलने पर मर्मांतक पीड़ा हुई। हमारे जनपद के एक राष्ट्रीय नेता पाण्डेय जी थे। कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता श्री पाण्डेय जी के निधन से कांग्रेस के एक युग का समापन हो गया। हम ब्लाक शहाबगंज क्षेत्रीयवासी दुखी हैं एवं हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दें।

भूपेंद्र प्रताप सिंह- सदस्य उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी लखनऊ

***

पंडित जी मेरे लिए नेता नहीं एक आदर्श पुरुष थे और कर्मठ इंसान थे। वे सदा याद रहेंगे।

राजीव दुबे-उद्योगपति, मुंबई

***

पंडित डॉ रत्नाकर पाण्डेय जी मेरे पड़ोसी होने के साथ ही मेरे राजनीतिक अभिभावक भी थे। मुलाकात होने पर पारिवारिक मुलाकात होती थी। उनका स्वर्गवास मेरे एवं मेरे समस्त कांग्रेसी सहयोगियों के लिए व्यक्तिगत क्षति है, जिसकी पूर्ति संभव नहीं है। सादर शत-शत नमन।

दुर्गा प्रसाद गुप्त-प्रदेश सचिव कांग्रेस

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी के निधन से काशी ही नहीं पूरे भारत में शोक की लहर है। ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी गंगा-जमुनी तहजीब के अलंबरदार, हिंदुस्तानी मुस्तरका तहज़ीब के मिसाल थे। "काशी से काबा" के यूपीए सरकार मिशन के अगुआ थे। वरिष्ठ कांग्रेसी नेता के साथ-साथ एक साधारण कार्यकर्ता की आवाज बनकर पूरी जिंदगी एक अध्यापक के रूप में अपना योगदान देते रहे। आज ऐसे महान साहित्यकार नेता को खोकर सिर्फ काशी ही नहीं बल्कि देश ने एक महान नेता को खोया है, जिसकी भरपाई करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन सा है। क्योंकि वे वक्त की आवाज थे। श्री पाण्डेय जी के लिए एक शेर चरितार्थ होता दिख रहा है-

"हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पर रोती है

तब जाकर चमन में दीदावर पैदा होता है"

डॉ० ज़फ़रुल्लाह ज़फर- जिला अध्यक्ष युवा कांग्रेस वाराणसी

***

ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति व परिवार को यह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। डॉ रत्नाकर जी सभी को सदैव याद आएंगे।

शालिनी यादव- पूर्व महापौर उम्मीदवार

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय प्रखर वक्ता, साहित्यकार एवं मूर्धन्य विद्वान थे। कांग्रेस के राष्ट्रीय क्षितिज पर सर्वमान्य नेता थे। हम लोगों के मार्गदर्शन एवं प्रणेता थे। ऐसे दुर्लभ प्रतिभा के व्यक्तित्व को नमन करता हूँ एवं हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

शैलेंद्र सिंह (भूतपूर्व उपाध्यक्ष)- सदस्य छावनी परिषद मंडल प्रवक्ता कांग्रेस वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय कांग्रेस के पथ-प्रदर्शकों में से थे। उन्होंने हम जैसे युवा कार्यकर्ताओं को न केवल मार्गदर्शन किया अपितु हम सबको आगे बढ़ाया। ऐसे महान व्यक्तित्व को प्रणाम। नमन!

हरीश मिश्रा- जिलाध्यक्ष, जिला कांग्रेस सेवादल, वाराणसी

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय हमारे राजनीतिक गुरु एवं संरक्षक थे। उनके नेतृत्व में वाराणसी सहित पूर्वांचल में कांग्रेस पार्टी को मजबूत जनाधार मिला था। वह कांग्रेस की बुलंद आवाज एवं एक सजग प्रहरी भी थे। उनके निधन से मुझ जैसे कांग्रेस कार्यकर्ताओं की व्यक्तिगत क्षति हुई है।

गणेश शंकर पाण्डेय-वरिष्ठ कांग्रेस नेता

***

डॉ रत्नाकर पाण्डेय जी मेरे लिए नेता नहीं अपितु गार्जियन थे। जब हम दिल्ली जाते थे तब डॉक्टर साहब से मुलाकात जरूर करते थे।

अजय कृष्ण दुबे- पूर्व कनिष्ठ उपाध्यक्ष, सेंट्रल बार वाराणसी

***

डॉ रत्नाकर पाण्डेय जी मेरे लिए नेता नहीं मेरे गार्जियन थे। मेरे माता के निधन पर मेरी डॉक्टर साहब से फोन पर वार्ता हुई थी। हमको भी सांत्वना दे रहे थे। हमें और हमारे परिवार को उनके जाने से बहुत क्षति हुई है।

देवेश पाण्डेय 'बबलू', वाराणसी

***

बाबू जी के जीवन और परोपकार का शब्दों में वर्णन करना बहुत ही मुश्किल है।

दीपक पटेल, अहमदाबाद गुजरात

***

डॉ रत्नाकर पाण्डेय निर्भीक राजनीतिज्ञ थे। सच कहने पर हमेशा अडिग रहते थे। उसके लिए कोई भी कुर्बानी देने को हमेशा तैयार रहते थे। यह कांग्रेस की बहुत बड़ी क्षति है।

राजेन्द्र मिश्र-पूर्व पार्षद, काल भैरव

***

श्रद्धेय डॉक्टर रत्नाकर पाण्डेय जी के असामयिक निधन से कांग्रेस की अपूरणीय क्षति हुई है। उसे कभी पूरा नहीं किया जा सकता। श्री पाण्डेय जी हिंदी जगत के प्रखर विद्वान थे। वह राज्यसभा के सांसद भी थे। उनके देहांत पर हम श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

अनीसुर्रहमान अंसारी-पार्षद (पुत्र स्वर्गीय मोहम्मद सफीउर्रहमान अंसारी, पूर्व मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार)

***

पंडित रत्नाकर पाण्डेय जी के निधन से राजनीति की अपूरणीय क्षति हुई है। इसकी कल्पना भी नहीं थी कि हमारे मसीहा हम लोगों का साथ छोड़ देंगे।

कुतुबुद्दीन बाबू भाई- पूर्व सदस्य, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी हम कांग्रेस जनों के अभिभावक थे। उनकी अनुपस्थिति सभी कांग्रेस जनों को खलेगी। उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

माधव उपाध्याय- वरिष्ठ कांग्रेस नेता

***

श्रद्धेय डॉक्टर रत्नाकर पाण्डेय जी एक संवेदनशील राजनेता, सच्चे राष्ट्रभक्त, परंपराओं में जीने वाले, आम आदमी की पीड़ा को महसूस करने वाले, संवेदनशील इंसान थे। काशी के लोग सदैव उन्हें हृदय में रखेंगे।

धर्मेंद्र सिंह- भाजपा नेता

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी का निधन कांग्रेस व समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। मैं अपनी हार्दिक संवेदनाएं अर्पित करता हूँ।

मुकुटधारी पाण्डेय- वरिष्ठ कांग्रेस नेता

***

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी हम लोगों के प्रेरणा थे। कांग्रेस के कद्दावर नेता थे। आज उनके निधन से हम सभी मर्माहत हैं। भगवान इनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार को यह दुख सहने की क्षमता दें। इससे अपूर्ण क्षति हुई है। मैं अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

डॉ० राजेश कुमार शर्मा- पूर्व सदस्य, पीसीसी उत्तर प्रदेश

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी हमारे प्रेरणा स्रोत थे। मैंने आज एक महान शिक्षाविद पत्रकार, एक राजनेता को खो दिया है, जिसकी कमी को कभी भरा नहीं जा सकता है। इनके परिवार के प्रति मेरी संवेदना है। इस दुख की घड़ी में भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

फजाहत हुसैन बाबू- महानगर कांग्रेस कमेटी वाराणसी

***

राज्यसभा के पूर्व संसद सदस्य डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी को नमन और श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके पूरे परिवार को यह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

रितु पाण्डेय

***

आदरणीय डाक्टर रत्नाकर पाण्डेय जी हमारे संरक्षक थे, जो अब नहीं रहे। भगवान उन्हें जहां भी रखें वहीं से आशीर्वाद और परिवार को सुख शांति प्रदान करें।

कैलाश नाथ- उपाध्याय सदस्य पीसीसी, मिर्जापुर

***

एक अद्भुत व्यक्तित्व धरती से चला गया।

विजय पाण्डेय-पूर्व सदस्य, पीसीसी उत्तर प्रदेश

***

कांग्रेस पार्टी के सर्वमान्य नेता आदरणीय रत्नाकर पंडित जी हम लोगों के अध्यक्ष थे। बहुत ही स्पष्टवादी एवं हर सुख-दुख में साथ देने वाले थे। श्री पाण्डेय जी के निधन से पार्टी की अपूरणीय क्षति हुई है। उनके निधन पर हम लोग अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि देते हुए नमन करते हैं।

विजय शंकर मेहता- पूर्व अध्यक्ष, महानगर कांग्रेस कमेटी वाराणसी

***

पूर्वांचल के सर्वांगीण विकास के प्रति दृढ़ संकल्प तथा राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए वे हमेशा याद किए जाएंगे। संसद हो या बाहर ज्वलंत समस्याओं पर हमेशा मुखर रहे देश के दक्षिणी क्षेत्रों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है तथा विदेश की धरती पर विश्व हिंदी सम्मेलन कराकर अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिंदी को प्रतिष्ठित कराया। श्रम शक्ति का पुरजोर समर्थन करते हुए डाला सीमेंट फैक्ट्री की बिक्री का मामला संसद में जोरदार तरीके से उठाकर सरकार को बिक्री से रोकने को बाध्य किए जिससे हजारों श्रमिक बेरोजगार होते-होते बचे जबकि तत्कालीन क्रेता प्रबंधक द्वारा करोड़ों के प्रलोभन दिए गए लेकिन उसे इन्होंने अपने सिद्धांतों से समझौता न करते हुए सख्ती से ठुकरा कर अपने दरवाजे से बाहर कर दिया। बाद में खरीद पक्ष को नतमस्तक होना पड़ा। बनारसीपन के प्रतीक प्रचलित रहन सहन विशेष तौर पर वाराणसी पान खाने की इनकी अपनी विशिष्ट शैली अपने आप आकर्षक का विषय था। साथ ही साहित्य साधना के साथ राजनीतिक क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय है। विचारों से ही नहीं बल्कि परिधान से भी उनके व्यक्तित्व में घुलिमिली भारतीयता स्पष्ट झलकती थी।खादी का कुर्ता,कड़क खादी की धोती, सिल्क की सदरी और उसपर तिरंगा उत्तरीय, आजीवन कांग्रेस के सिद्धांतों की तरह उनके व्यक्तित्व से चिपका रहा।

डॉ० धीरेन्द्र पाण्डेय- महामंत्री, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय के निधन से कांग्रेस पार्टी की क्षति हुई है, वह पूरा करना अत्यंत कठिन काम लगता है।

सुबाष राम- कांग्रेस कार्यकर्ता एवं पूर्व प्रधानमन्त्री, छात्र-संघ काशी विद्यापीठ वाराणसी

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी के निधन से लोकतंत्र की आवाज बुलंदी में कमी आएगी, जो बहुत ही दुखद है। ऐसे महान व्यक्तित्व, महानायक को मेरा प्रणाम।

शिवपाल श्रीवास्तव (उपाध्यक्ष)- उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी व्यापार प्रकोष्ठ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय पूर्व सांसद के निधन से हम सब काफी मर्माहत हैं। उनके निधन से वाराणसी कांग्रेस के साथ पूरे देश की काफी क्षति हुई है।

अशोक कुमार पाण्डेय (पूर्व प्रधान)- पूर्व महामंत्री जिला कांग्रेस कमेटी वाराणसी

***

पूर्व सांसद रत्नाकर पाण्डेय जी के निधन से वाराणसी जिले की अपूरणीय क्षति हुई है। वह बनारस के शान थे। वह हमेशा बनारस जिले के उन्नति एवं विकास के बारे में पूछा करते थे। वह युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत थे। उनकी भरपाई किया जाना मुश्किल है।

श्यामसुंदर त्रिपाठी- पूर्व जिला अध्यक्ष कांग्रेस सेवा दल वाराणसी, पूर्व सहायक सचिव प्रशासन, सेंट्रल बार वाराणसी

***

पूर्व सांसद पूज्य डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी का व्यक्तित्व महान था। कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता, महान नेता के साथ शिक्षाविद के रूप में उनकी पहचान थी और वे सादगी के महान आत्मा थे। उनके निधन से कांग्रेस ने एक महान नेता के साथ समाज सेवी को भी खो दिया है। मैं उनके चरणों में विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

राजेंद्र प्रसाद जायसवाल- पूर्व अध्यक्ष, महानगर कांग्रेस सेवादल

***

हम सब के अग्रज डॉक्टर रत्नाकर पाण्डेय जी ईश्वर के अवतार स्वरूप धरती पर आकर गरीबों मजदूरों साहित्यकारों कवियों एवं आम जनता की एक बुलंद आवाज थें, जिन्होंने कभी जाति-पाति नहीं देखी। आज तक जो भी उनके पास गया उसे कुछ न कुछ मिला है। मुझे एक वाकया याद है कि "1992 में डॉक्टर जगन्नाथ मिश्र जी, मुख्यमंत्री बिहार सरकार सर्किट हाउस बनारस में डॉक्टर रत्नाकर पाण्डेय जी के साथ रुके थे। डॉक्टर रत्नाकर जी ने कहा मिश्र जी 1-1 लाख रूपये कवियों, साहित्यकारों, पत्रकारों को अभी चेक काट कर दीजिए। मिश्र जी बोले डॉक्टर साहब आप रूपये इसी तरह बंटवा देंगे..... तभी डॉ० रत्नाकर जी ने कहा "जो बाँट रहोगे वही कुर्सी से उतरने के बाद काम आएगा। इतनी दूर की बात आज के परिवेश में डॉक्टर साहब ने सुझाया था, वह भी एक मुख्यमंत्री को" । डॉ रत्नाकर जी एक युग थें और आज एक युग की समाप्ति हो गई। हिंदी साहित्य व राजभाषा का कलश लुढ़क गया। महान राजनेता, विचारक, चिंतक एवं गरीबों के मसीहा हिंदी के पुरोधा को हम सबने खो दिया। बनारस ही नहीं हिंदी जगत को सुना कर चले गए। भगवान उनकी आत्मा को शांति देवें।

डॉ० अजय कुमार श्रीवास्तव -कवि चकाचौंध ज्ञानपुरी, लंका, वाराणसी

***

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी को श्रद्धांजलि एवं परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

अशोक सिंह- जनवार्ता, वाराणसी

***

डॉक्टर रत्नाकर पाण्डेय जी के आकस्मिक निधन के समाचार को सुन स्तब्ध हूँ। डॉक्टर साहब के निधन से कांग्रेस ही नहीं भारत के हिंदी जगत को क्षति पहुंची है, उसकी भरपाई आने वाले समय में असंभव है। उन्हें नमन एवं श्रद्धांजलि तथा परिवार को इस आघात को सहन करने की शक्ति ईश्वर प्रदान करें इसकी प्रार्थना है।

ए०के० राय- सामाजिक कार्यकर्ता एवं पत्रकार

***

मेरे बड़े भाई श्री रत्नाकर पाण्डेय जी की मृत्यु पर शोक संवेदना। भगवान उनके परिजनों को इस दुख की घड़ी में शक्ति प्रदान करें।

यज्ञ नारायण दुबे- प्रसाद इंटर कॉलेज पाण्डेयपुर वाराणसी

***

हिंदी साहित्य के प्रकांड विद्वान पत्रकारिता के गुरु और हमारे समाचारपत्र 'गांव-गिरांव' के संरक्षक अभिभावक डॉक्टर रत्नाकर पाण्डेय जी का निधन हम सभी की व्यक्तिगत क्षति है। शिक्षक और अभिभावक के रूप में उनका संरक्षण सदैव रहा है। हम 'गांव गिरावं' परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री धर द्विवेदी- संपादक गांव गिरावं, चंदौली

***

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रोफेसर रत्नाकर पाण्डेय जी के निधन से शिक्षा जगत एवं राजनीतिक क्षेत्र में जो शून्यता आई है, उसे निकट भविष्य में भर पाना आसान नहीं होगा। सच तो यह है कि एक प्रखर वक्ता एवं निडर नेतृत्व का अंत हो गया है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि उनके परिवार को इस दुखद घड़ी को सहने की क्षमता प्रदान करें।

प्रोफेसर रमाशंकर त्रिपाठी- पूर्व आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी

***

'....तो अनंत आकाश में बाऊ जी आप चले ही गए!'

"क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा।

पञ्च तत्व से बना शरीरा।।"

जी हाँ! इस महामना शरीर से अपने रिश्तों को याद कर हम जो भी मातम करें, उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित करें, या न करें, अब उन पर कुछ असर नहीं पड़ने वाला। वह तो दुनिया की हर मंजिल से दूर जा चुके हैं और अब इतिहास के अमिट अध्याय हो गए हैं। अब तो उनकी यादें ही साथ रहेंगी। उनको भूलना आसान थोड़े ही होगा। आप ने काशी की राजनीति को नयी चाल में ढाला। शिक्षा-कार्य, लेखन, पत्रकारिता एवं वक्तृत्व कला को नया स्वरूप दिया। शास्त्रीयता की झंकार पैदा करने वाले तार को हटाकर शास्त्रीय एवं लोक के बीच की 'काशिका' रूपी थाप की गूँज को संसद से लेकर काशी की गलियों तक महकाया, गुनगुनाया तथा गुंजायमान किया। आपको विनम्र श्रद्धांजलि।

डॉ० प्रभा शंकर मिश्र- प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी, एवं उपाध्यक्ष, पी.आर.एस.आई., वाराणसी चैप्टर

***

वरिष्ठ राजनेता, शिक्षक, हिंदी के साहित्यकार प्रोफेसर (डॉ०) रत्नाकर पाण्डेय जी के निधन से बड़ी क्षति हुई है। अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर राष्ट्र ने उनकी मुखर आवाज को संसद में बोलते देखा एवं सुना है। मैं उनके निधन पर अपनी हार्दिक संवेदना अर्पित करता हूँ एवं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें एवं परिवार को मजबूती प्रदान करें।

डॉ० भरत कुमार- पत्रकार एवं शिक्षक, शास्त्री नगर, वाराणसी

***

'प्रख्यात हिंदी प्रेमी-डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी से तीन मुलाक़ातें'

डॉ० राही मासूम रजा ने लिखा है कि समय बड़ा बेदर्द होता है। यादों का आदर नहीं करता, याद करने का मौका नहीं देता, बस गुजरता चला जाता है। प्रतिष्ठित समाचार पत्र दैनिक जागरण में दिनांक 2 सितंबर 2018 को पढ़ा कि डॉक्टर रत्नाकर पाण्डेय का नई दिल्ली स्थित लक्ष्मी नगर निवास पर एक लम्बी बीमारी के बाद 82 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। यह दुखद समाचार पढ़कर मन अतीत की वादियों में खो गया। उनसे हुई 3 मुलाकातों की याद आने लगी। ये तीनों भेंट उनसे जुड़ी जिंदगी के सुहाने सफर की छोटी-छोटी दास्तान है।

बीते कई वर्षों की बात है। जब मैं समाज कार्य विषय से जुड़ा छात्र था। सांसद सुधाकर पाण्डेय जी के दर्शन को नई दिल्ली गया। पाण्डेय उन दिनों आपके बड़े भ्राता चंदौली संसदीय क्षेत्र के लोकसभा सांसद थे। 42 अशोक रोड नई दिल्ली उनका निवास स्थल था। अनुज डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी भी वहीं साथ रहते थे। मैंने बगल वाले कमरे में जमीन पर गद्दा बिछे जगह पर टेबल के सहारे लिखा-पढ़ी कर रहे एक खूबसूरत व्यक्ति से पूछा- " सांसद जी से मिलना है"

आपने पूछा- आप हैं कौन?

मैंने कहा- मैं काशी विद्यापीठ समाज कार्य विभाग से जुड़ा छात्र।

बैठिए। है नहीं, पार्लियामेंट गए हैं। शाम को भेंट होगी।

आपने पूछा -'इंदिरा गांधी और समाज सेवा' विषय पर लेख लिख सकते हैं?

मैंने कहा- अवश्य, श्रद्धेय।

आपने कहा- आप यहीं दोपहर का भोजन लीजिए। इसके बाद पास बैठ एक 'इंदिरा जी एवं समाज सेवा' से जुड़ा लेख एक डेढ़ घंटे में लिखकर अविलंब दीजिए। प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर स्मारिका निकल रही है। उसमें आपका यह लेख सम्मिलित हो जाएगा।

मैंने कहा- बाहर खा लूंगा।

आत्मीयता से डांटते हुए कहा- कहां खा लोगे? ज्यादा पैसा हुआ है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनकी आत्मीयता भरी डांट से मैं सहम गया था। भीतर से थाल में परोसा गया भोजन आया। दोपहर का भोजन किया। कुछ देर बाद डॉक्टर साहब ने मुझे चार कोरे-कोरे सफेद पन्ने दिए। मैं डेढ़ घंटे में माननीया प्रधानमंत्री द्वारा किए जा रहे समाज सेवा का चिंतन-मनन कर अपनी समझ से एक लेख तैयार कर उनके हाथ सुपुर्द कर दिया। 5 मिनट में लेख पढ़ने के बाद आपने कहा कि अच्छा लिखे भाई वेद प्रकाश। यह तुम्हारा लेख माननीय प्रधानमंत्री जी के जन्मदिन पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में अवश्य छपेगा। थोड़ी देर चुप्पी साधने के बाद आपने कहा शोध छात्र के रूप में तुम्हें कोई स्कॉलरशिप मिलती है या नहीं? मैंने कहा- नहीं श्रद्धेय। मैं तुम्हारे लिए चितकारा साहब को एक पत्र लिख रहा हूँ। शिक्षा मंत्रालय जाकर उनसे मिल लेना। हो सकता है तुम्हारी कुछ मदद करें। चितकारा साहब से मिला। प्यार से बैठाए। चाय पिलाई। कोशिश की। लेकिन मेरे भाग्य में इस संदर्भ की कामयाबी नहीं लिखी थी। आज उनकी उस आत्मीयता, सहायता करने की अभिलाषा को मन ही मन सोच रहा हूँ तो आँखें नम हो जा रही हैं। सचमुच वे साहित्यिक जीव थे। उनमें मानवीय संवेदना थी। व्यक्ति से जुड़ी स्मृतियाँ ही तो शेष रह जाती हैं।

वर्षों बाद मैं रेल की नौकरी में स्टेशन मास्टर हो गया था। लेकिन लिखने-पढ़ने से शौक नहीं छूटा। अवकाश पर वाराणसी आया था। पंडित शीतल प्रसाद उपाध्याय पर एक लेख तैयार करना था। सोचा, नागरी प्रचारिणी चलूं। हो सकता है कुछ सामग्री मिल जाए। मेरा सौभाग्य था कि डॉक्टर साहब भी नागरी प्रचारिणी सभा में आए हुए थे। जाकर उनका दर्शन किया। देखा तो पहचान गए थे। पूछा- आजकल भाई वेदप्रकाश हो कहां? मैंने कहा- रेल में नौकरी मिल गई है। मकलडीहा रेलवे स्टेशन पर स्टेशन मास्टरी कर रहा हूँ। बहुत अच्छा। बैठो, चाय पी लो। बाद में पूछा- कैसे आए थे? मैंने कहा- श्रद्धेय पंडित शीतल प्रसाद उपाध्याय पर एक लेख लिखना है। सामग्री जुटानी है। आपने तपाक से कहा- पंडित शीतला प्रसाद विद्वान व्यक्तित्व हैं..... मैंने उनकी बात में व्यवधान डालते हुए कहा- श्रद्धेय, पंडित शीतला प्रसाद नहीं। पंडित शीतल प्रसाद, जो कालाकांकर नरेश राजा रामपाल सिंह के अखबार हिंदुस्तान के सहकारी संपादक थे। सहसर निवासी थे। अच्छा-अच्छा लिख डालो। मैंने कहा आप मेरे नाना दिवंगत दुनिया उपाध्याय के पट्टीदार थे। भाई थे। आप मुझे चश्मे के भीतर से गौर से निहारने लगे थे। मैं प्रणाम करके सभा से जुड़े आर्य भाषा पुस्तकालय की ओर चल दिया था। ढूंढते-ढूंढते उनके द्वारा विरचित 'शीतल समीर' एक पतली सी मढ़ी हुई सजीव कविता की पुस्तक पढ़ने को हाथ लगी थी। उस दिन बातचीत के दरम्यान विद्वान सांसद डॉ रत्नाकर पाण्डेय ने कहा था कि वेद प्रकाश, आजकल मैं हिंदी सलाहकार समिति का सदस्य हूँ। दक्षिण भारत के दौरे पर जा रहा हूँ। व्यस्त कार्यक्रम रहता है। मैंने कहा था श्रद्धेय, हिंदी की आप द्वारा सच्ची सेवा देश सेवा है। 'पत्रकारिता और सभा' आप द्वारा विरचित अनमोल ग्रंथ है। 'सोच-विचार' जैसी वाराणसी से सम्मानित पत्रिका के संपादक श्री नरेंद्र मिश्र ने मुझसे कुछ समय पहले कहा था कि जब मैंने बैंक की नौकरी के दरम्यान टाउन हॉल वाराणसी में 'हिंदी मेला' का वृहद् आयोजन किया था तो डॉक्टर रत्नाकर पाण्डेय ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। आप पद्मश्री बेकल उत्साही के साथ नई दिल्ली से पधारे थे। राजकाज की राजभाषा हिंदी का बैंकों में प्रयोग देख हम सबकी प्रशंसा की थी।

शिक्षाविद, कुशल राजनेता, राष्ट्रभाषा हिंदी अनुरागी, राजभाषा हिंदी के समर्थक प्रयोगधर्मी डॉक्टर रत्नाकर पाण्डेय से आख़िरी एवं तीसरी मुलाकात आपके बड़े दामाद प्रख्यात प्रोफ़ेसर पत्रकारिता जगत के कुशल स्तंभ डॉक्टर अनिल कुमार उपाध्याय जी की बड़ी बेटी चारु के विवाह उत्सव में हुआ था। आप बच्चे की उंगली पकड़े पांडाल से भीतर की ओर जा रहे थे। हंसकर बातचीत क्षण मात्र हुई थी। खुश थे। कुर्ता धोती लिबास में थे। प्रोफ़ेसर साहब की धर्मपत्नी साधना आपकी बेटी हैं। भावों का संसार लपेटे उनके बारे में बस यही कहूंगा आप सूर्य की तरह जीवनभर राजभाषा हिंदी एवं देश की खातिर तपते रहें। आपको कोटिशः नमन।

डॉ० वेद प्रकाश पाण्डेय- साहित्यकार, इंदिरा नगर, वाराणसी

***

डॉ० रत्नाकर पांडेय मेरे बड़े भाई की तरह थे। सबसे पहले उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। महाविद्यालय में वे पहले मेरे वरिष्ठ सहयोगी रहे और बाद में प्राचार्य। अपने कार्य और संस्था के प्रति मैंने उन्हें हमेशा समर्पित देखा था। जब वे राजनेता हुए तब भी राजनेता के रूप में अपनी भूमिका को महाविद्यालय के बाहर तक ही सीमित रखा। हां बाहर की दुनिया में उनके प्रभावशाली होने का लाभ महाविद्यालय को अवश्य मिला। वर्तमान भवन के पीछे उनका बड़ा योगदान सबको याद है। सबकी मदद के लिए भी वे प्रायः तत्पर रहते थे। विवाद या असहमति होने पर भी वे अन्ततः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिसी को हानि पहुंचाने से बचते थे। अपने विषय पर उनका पूरा अधिकार था। उनके शिष्यों की एक लम्बी कतार है। मैं उन्हें पुन: श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

डॉ० रमेश शर्मा, "दिविक"- प्रिंसिपल, मोतीलाल नेहरू कॉलेज

***

ॐ शान्ति शान्ति। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि डॉ० साहब की आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान कर आवागमन के बन्धन से मुक्ति दें।

हीरालाल पाण्डेय

***

प्रिय दीपांकर जी! डॉक्टर पाण्डेय जी के निधन का समाचार सुनकर बहुत दुख हुआ। डॉ० पाण्डेय जी राजभाषा हिंदी के प्रबल समर्थक थे और हिंदी समर्थकों से विशेष स्नेह भाव रखते थे। भगवान उनकी आत्मा को अपने श्री चरणों में शरण दें और आप सब परिजनों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

एमपी भारद्वाज

***

हिंदी जगत के महान साहित्यकार व पूर्व राज्यसभा सांसद के मृत्यु पर गहरी संवेदना व्यक्त करता हूँ। उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। ईश्वर उनके परिवार के लोगों को इस दुख की घड़ी में मजबूती प्रदान करें।

मनोज कुमार पाठक- तहसीलदार वाराणसी

***

रत्नाकर पाण्डेय को हार्दिक श्रद्धांजलि

बैजनाथ वर्मा

*****

कुछ महत्वपूर्ण चित्र

तत्कालीन प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी के साथ सांसद डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा आयोजित 'जनसंपर्क एवं पत्रकारिता' विषयक सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला (29 जनवरी-04 फरवरी, 2011) के उद्घाटन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि (बाएं से दूसरे) डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

2 सितम्बर , 2018

दैनिक जागरण

नहीं रहे पूर्व सांसद व हिंदी सेवी डा. रत्नाकर पांडेय

नेताओं ने जताया शोक मोतीलाल नेहरू पीजी कॉलेज के थे प्राचार्य

ख्यात तबला वादक पं. कुमार लाल मिश्र का निधन

जनवार्ता

जनवार्ता वाराणसी-वार्ता

डा. रत्नाकर पाण्डेय का निधन, काशी स्तब्ध

नई दिल्ली आवास पर ली आखिरी सांसें, मणिकर्णिका घाट पर अंतिम संस्कार आज, शोक संवेदनाएं

पूर्व सांसद के निधन पर श्रद्धांजलियों का तांता

अमर उजाला

कांग्रेस के पूर्व सांसद डॉ. रत्नाकर पांडेय का निधन

आज निकलेगी अंतिम यात्रा, मणिकर्णिका घाट पर होगा अंतिम संस्कार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज — वाराणसी

पूर्व सांसद डाक्टर रत्नाकर पाण्डेय का निधन, काशीमें आज होगी अन्त्येष्टि

जनसंदेश टाइम्स

पूर्व सांसद रत्नाकर पांडेय का निधन

निधन से काशी की वैचारिक राजनीति में आ गई शून्यता

रविवासरीय हिन्दुस्तान

रत्नाकर पांडे का दिल्ली में निधन

कांग्रेस के आजीवन सच्चे सिपाही रहे डॉ. रत्नाकर

राष्ट्रीय सहारा

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व पूर्व राज्यसभा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज

वाराणसी

डाक्टर रत्नाकर पांडेय का पार्थिव शरीर पंचतत्वमें वि

जनसंदेश टाइम्स

डॉ. रत्नाकर पांडेय पंचतत्व में विलीन

दैनिक जागरण

डा. रत्नाकर पांडेय पंचतत्व में विलीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमर उजाला — वाराणसी

डॉ. रत्नाकर पांडेय का पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन

[illegible]

युवा कांग्रेस ने दी श्रद्धांजलि

[illegible]

जनवार्ता — वाराणसी-वार्ता

कांग्रेस के दिग्गज नेता डॉ रत्नाकर पांडेय पंचतत्व में विलीन

[illegible]

हिन्दुस्तान — वाराणसी

डॉ.रत्नाकर पांडेय पंचतत्व में विलीन

अंतिम यात्रा

[illegible]

पूर्व सांसद को आनंद शर्मा ने दी श्रद्धांजलि

जासं, वाराणसी : पूर्व सांसद राज्यसभा व हिंदी साहित्य तथा हिंदी पत्रकारिता के लब्ध-प्रतिष्ठित विद्वान शिक्षक डा. रत्नाकर पांडेय के विगत दिनों हुए निधन पर वरिष्ठ कांग्रेसी नेता, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं अखिल भारतीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य, सांसद आनंद शर्मा ने श्रद्धांजलि दी। उनके निज आवास पर जाकर उनके चित्र पर सूत की माला अर्पित करते हुए श्रद्धांजलि दी। शोक-संतप्त परिवार को ढांढस बंधाया तथा शोक-पुस्तिका पर अपनी भावांजलि अर्पित की।

पुस्तिका में आनंद शर्मा ने लिखा कि डा. रत्नाकर पांडेय के निधन से हम सबको गहरा दुख पहुंचा है। इस दौरान वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं समेत उनके परिवार के सदस्य मौजूद रहे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्रीय सहारा

वाराणसी

डा. रत्नाकर पाण्डेय पंचतत्व में विलीन

[illegible]

श्रद्धांजलि व दर्शन के लिए शुभचिंतकों व प्रशंसकों का लगा रहा तांता

[illegible]

वाराणसी-वार्ता

पूर्व केन्द्रीयमंत्री पहुंचे दिवंगत डा. रत्नाकर पाण्डेय के घर, परिजनों को दी सांत्वना

वाराणसी। [illegible] ... मौजूद रहे।

जिला फुटबाल एसोसियेशन के मान्यता सदस्यों एवं निर्णायकों की बैठक कल

वाराणसी। [illegible] ... ने दी है।

*****

तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ डॉ० रत्नाकर जी आत्मीय पलों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Anil Kumar Upadhyay shared a post. ...
4 hrs · Facebook for Android

आदरणीय बाबू जी सबके प्रति प्रेम भाव रखते थे।पूरे कुनबे सहित काशी के लोगों के लिए उनके हृदय एवं मन में विशेष लगाव था। इस फोटो के एक दिन पूर्व मुझसे तथा बनारस के प्रायः सभी परिजनों व परिचितों से उन्होंने आत्मीयता से बात किया था। अब हमारे कान उस प्रेम भरी आवाज को सुनने के लिए तरसते रहेंगे।उनकी स्मृति को सादर नमन।

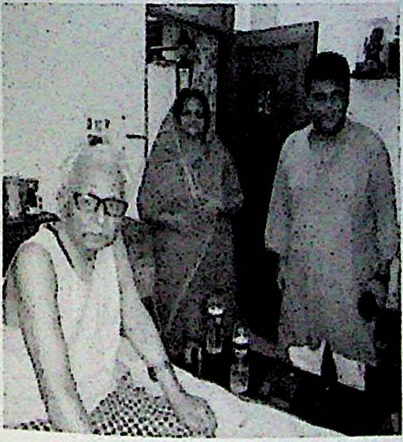

Arunakar Pandey 13 hrs

इस तस्वीर की एक त्रासदी है ...कि यह हमारी अंतिम क्लिक साबित हुई !! (पूज्य छोटे बाबा रत्नाकर जी को इस बच्चे की विदाई 🙏)

You, Anil Kumar Upadhyay and 36 others

7 comments

Sad Comment Share

Prabhu Nath Pandey
Naman

***Anil Kumar Upadhyay** is with **Ananya Upadhyay** and 9 others.* ...
1 Sep at 10:51

डाक्टर रत्नाकर पाण्डेय पूर्व सांसद राज्य सभा एवं हिन्दी साहित्य तथा हिन्दी पत्रकारिता के प्रख्यात विद्वान एव लेखक का आज सुबह ८२ वर्ष की अवस्था में दिल्ली स्थित आवास पर निधन हो गया।पाण्डेय जी दिल्ली विश्वविद्यालय के मोतीलाल नेहरू पोस्ट ग्रेजुएट कालेज के प्राचार्य रहने के साथ ही इंदिरा गांधी व राजीव गांधी के अत्यन्त निकट थे और तृतीय एवं चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन सहित हिन्दी आन्दोलन में बढ़ -चढ़ कर हिस्सा लेते रहे।मैसूर हिन्दी सम्मेलन को राष्ट्रीय स्तर पर कराने के साथ ही राजभाषा को पूरे भारत सहित दक्षिण में प्रसार ,प्रचार में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।अपने बड़े भाई पूर्व सांसद पं. सुधाकर पाण्डेय के साथ मिलकर नागरी प्रचारणी सभा का विस्तार दिल्ली व अन्य जगहों पर करने में भी उनका योगदान था।डाक्टर रत्नाकर पाण्डेय प्रखर सांसद के साथ ही बड़े साहित्यकार और हिन्दी सेवी थे।काशी हिन्दू वि.वि. से ही उनकी शिक्षा हुयी थी , पं. कमला पति त्रिपाठी ,डाक्टर सम्पूर्णानन्द आदि की शुरू की गयी काशी की वैचारिक परम्परा की वे अन्तिम कड़ी थे। उनके निधन से काशी की वैचारिक राजनीति एवं वैचारिकी की बड़ी क्षति हुयी। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

Sad Comment Share

Write a comment...

Sumit Kumar Pandey
सादर अंतिम प्रणाम् 🙏 एवं विनम्र श्रद्धांजलि 🙏
Like Reply

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Anil Kumar Upadhyay shared a photo. ...

3 Sep at 20:33 •

पूर्व सांसद ,प्रख्यात साहित्यकार, हिन्दी सेवी डाक्टर रत्नाकर पाण्डेय के पार्थिव शरीर को मणिकर्णिका घाट, वाराणसी में गार्ड आफ आनर देते उ.प्र.पुलिस के जवान व अधिकारी साथ खड़े कांग्रेस सेवा दल के कर्मठ कार्यकर्ता व प्रदेश अध्यक्ष डाक्टर प्रमोद पाण्डेय।

Krishna Pandey

2 Sep at 17:39 •

Like Comment Share

Anil Kumar Upadhyay and 13 others

Sumit Kumar Pandey

दुखद! विनम्र श्रद्धांजलि

5d Like Reply

***

कुछ प्रमुख लोगों की भावांजलि सोशल मीडिया के झरोखे से

गिरिजा शंकर, प्रो० आगरा विश्वविद्यालय

Very sad news,no words to describe sorry.. vinamra shradanjali..naman

***

राघवेंद्र दूबे, वरिष्ठ पत्रकार, पटना

काशी या कहिये भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि व्यक्तित्व, हिंदी गांव के नागरिक और आजीवन हिंदी सेवी, रत्नाकर पाण्डेयय जी को नमन। श्रद्धांजलि।

***

ए०के० लारी, वरिष्ठ पत्रकार

सादर नमन!

***

गिरिजेश तिवारी, प्राध्यापक

शत शत नमन विनम्र श्रद्धांजलि

***

राज कुमार सिंह, सम्पादक- जनवार्ता

वे वास्तव में हर क्षेत्र में दिग्गज थे,सत सत नमन।

***

विनोद पाण्डेय, प्रोफेसर, गुजरात विद्यापीठ

अत्यंत दुखद. भावभीनी श्रद्धांजलि

***

राजीव उपाध्याय, वरिष्ठ कांग्रेसी नेता

सुनकर बहुत दुख हुआ शत शत नमन

***

नरेंद्र मेहता, उपाध्यक्ष, पी.आर.एस.आई. नार्थ ज़ोन

सादर नमन। ॐ शान्ति।

***

विश्वनाथ गोकर्ण, वरिष्ठ पत्रकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अत्यंत दुखद है ... मेरा उनका पुराना रिश्ता था... एक बार दिल्ली दूरदर्शन के लिए रिटेन टेस्ट देने के वास्ते गया था... तब मैं उनके आवास पर ही रुका था... मेरे साथ वरिष्ठ पत्रकार तुलसीदास मिश्रा, एलबीके दास और मेरे बचपन के मित्र डॉ आनंद वर्धन भी थे .... रत्नाकर जी ने हमें न सिर्फ अपने घर पर ठहराया बल्कि परीक्षा स्थल तक हमारे आने-जाने का प्रबंध भी किया था.... श्रीमती सोनिया गांधी को हिंदी सिखाने और उन्हें भारतीय संस्कृति में ढालने की उनकी भूमिका को कोई कैसे भूल सकता है... डॉ रत्नाकर पाण्डेय को मेरी विनम्र श्रद्धांजलि....

***

विनीत सिंह, वरिष्ठ पत्रकार, राजस्थान

सादर नमन... दिल्ली काम करते समय मुझे आपके साथ ही उनके दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ... हर बार उन्होंने काम की बारीकियों पर बात की...जो आज भी काम आ रही हैं... ईश्वर इस दुख की घड़ी में आपको और गुरुआइन को संभलने की शक्ति दे...

***

अरविंद सिंह, डी. डी. न्यूज़, वाराणसी

सादर नमन

***

डॉ० नागेन्द्र पाठक, वरिष्ठ पत्रकार, वाराणसी

बहुत दुखद। हार्दिक नमन। भगवान उनकी आत्मा को शांति दें।

***

मंजुला चतुर्वेदी, प्रोफ़ेसर, म. गां. काशी विद्यापीठ, वाराणसी

नमन

***

मीना चौबे

बेहद दुःखद ईश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें व परिजनों को धैर्य । ।ॐ शांति ।

***

कृपाशंकर जायसवाल, प्रोफ़ेसर, म. गां. काशी विद्यापीठ, वाराणसी

Dukhad. Shradhanjali

***

विश्वनाथ पाण्डेय, पूर्व पी.आर.ओ., बी.एच.यू.

मेरी विनम्र श्रद्धांजलि

***

रजनीश त्रिपाठी, वरिष्ठ पत्रकार

यह प्रखर और बिना लाग-लपेट के मजबूती से बातें रखनेवाले राजनेता का जाना है। श्रद्धांजलि। अब ऐसे लोग कहां मिलते हैं जो मर्यादित शब्दों को भी लोकतंत्र का अस्त्र बना लेते हैं।

***

डॉ० सुशील राय, प्राध्यापक, देहरादून

अत्यंत दुखद घटना। एक विचारवान् राजनीतिज्ञ एवं हिन्दी साहित्य के बड़े विद्वान का यूं महाप्रयाण कर जाना पूरे काशी समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है। दिवंगत आत्मा को शत् शत् नमन एवं भावपूर्ण श्रद्धांजलि ।

***

प्रवीण तिवारी, युवा कांग्रेस नेता

शत शत नमन

***

योगेंद्र सिंह, कुलपति, चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विनम्र श्रद्धांजलि

***

राघवेंद्र मिश्रा, सहायक प्रोफ़ेसर, अमरनाथ

Dukhad, sadar naman

***

प्रोफेसर चतुर्भुज नाथ तिवारी, म. गां. काशी विद्यापीठ, वाराणसी

सादर नमन , विनम्र श्रद्धांजलि ।

***

जितेंद्र तिवारी, प्रोफ़ेसर, गोरखपुर विश्वविद्यालय

विनम्र श्रद्धांजलि, नमन।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

***

पी के मिश्रा

मन को दुख पहुंचाने वाला समाचार। काशी ही नही देश की अपूरणीय क्षति। हृदय मे श्रद्धांजलि।

***

प्रदीप उपाध्याय

विनम्र श्रद्धांजलि।

***

प्रो० हरीश कुमार, रोहतक

विनम्र श्रद्धांजलि

***

चंचल सिंह, वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं पत्रकार

डॉ० साहब से बहुत पुराने संबंध रहे है जब मैने कांग्रेस सेवादल से अपने राजनीति की शुरूआत की थी तब से हमेशा उनसे मिलना होता था, जब वह दिल्ली से आते या जाते थे तब अक्सर मुलाकात होती थी। पिछले कुछ सालों में रोजीरोटी के कारण उनसे मुलाकात नहीं हो पाती थी, लेकिन प्रेमशंकर तिवारी जी से हमेशा उनकी जानकारी मिलती थी। आज उनकी मृत्यु का समाचार सुन कर दुखीः हो गया। नमन, डॉ रत्नाकर पाण्डेय जी को मेरी विनम्र श्रद्धांजलि....

***

डॉ० प्रमयेश पाण्डेय, अधिवक्ता, वाराणसी

शत शत नमन।

***

बैजनाथ सिंह, वरिष्ठ कांग्रेस नेता

बेहद दुखद वाकई कांग्रेस परिवार ने अपना एक सच्चा साथी और बनारस कांग्रेस का संरक्षक खो दिया, ऐसे निर्भीक और बेबाक लोग कदाचित फिलहाल तो पार्टी में या यों कहिये कि राजनिति में अब नहीं के बराबर हैं। उनकी पावन स्मृतियों को बार बार नमन और विनम्र श्रद्धांजलि .

***

अरविंद जोशी, प्रो०, बी.एच.यू.

Bahut dukhad. May his soul rest in peace

***

शिव कुमार मिश्रा, प्रोफ़ेसर, म. गां. काशी विद्यापीठ, वाराणासी

दुखद। विनम्र श्रद्धान्जलि

***

राजकुमार सिंह गौतम, प्रोफ़ेसर, एसएमएस, वाराणासी

शत शत नमन

***

शाहिद अली, स० प्रोफ़ेसर पत्रकारिता, रायपुर

Vinamra Sradhanjali

***

पद्मपति शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

शत शत नमन

***

राहुल मिश्रा, वरिष्ठ कांग्रेस नेता

Dukhad. Ishwar unki atma ko shanti de. Mera pranam.

***

राजीव उपाध्याय, प्रो० इतिहास, म.गां. काशी विद्यापीठ, वाराणसी

शत शत नमन

***

राजीव द्विवेदी

समाचार जान कर शोक हुआ।

मेरी विनम्र श्रद्धांजलि।

***

अखिलेश कुमार त्रिपाठी

सादर नमन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

***

सुमित कुमार पाण्डेय, शोधछात्र-पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, म.गां. काशी विद्यापीठ, वाराणसी

सादर अंतिम प्रणाम् एवं विनम्र श्रद्धांजलि

***

परिवारजनों की संस्मृतियाँ एवं भावांजलि

माता पिता जीवन के रेगिस्तान में स्वाति की बूंद की तरह होते है। उनके बारे क्या लिखे, क्या ना लिखे? बड़ी विषम परिस्थिति है। क्योंकि जीवन के हर उतार-चढ़ाव सभी संघर्षों में और सारी विषमताओं में लड़ने की छमता उन्ही द्वारा प्रदत्त है। इस दुख से सभी को लड़ना पड़ता है। आज हमारी बारी है।

जब माँ छोड़कर जाती है,

तो दुआ और दुलार का अभाव हो जाता है

जब पिता छोड़कर जाते है,

तो साहस और हौसला देने वाला चला जाता है

डॉ० साधना उपाधयाय, बड़ी सुपुत्री

***

किसी भी पुत्र के लिए पिता के बारे में दो शब्द लिखना संसार का सबसे दुरूह कार्य है। 65 वर्षों से दिल्ली में रहते हुए बनारस उनकी आत्मा रहा। एक पिता के नाते मेरे लिए तो वे सर्वस्व थे। उनका जाना हमारे परिवार और कुल के लिए अपूर्णनीय क्षति है। परंतु उनका आभामंडल व कृति से हमारे ही नहीं आने वाली पीढ़ियों का भी मार्ग आलोकित होता रहेगा। बाबूजी बहुत ही सहज और सरल थे शायद मैं सहजता से कह सकता हूं बहुत कठिन है सरल होना।

मधुकर पाण्डेय, सुपुत्र

***

इस करुणा कलित हृदय में, अब विकल रागिनी बजती

क्यों हाहाकार स्वरों में वेदना असीम गरजती?

जो घनीभूत पीड़ा थी मस्तक में स्मृति-सी छायी

दुर्दिन में आँसू बनकर वह आज बरसने आयी।

प्रसाद जी की इन पंक्तियों के अलावा शब्द थोड़े पड़ रहे हैं, पिता की स्मृतियों को प्रणाम करने के लिए। क्या कहे ये जीवन उनका ही दिया है, शिक्षा और संस्कार उनके ही द्वारा रोपित है। आज जो पौधे के रूप में अगर विकसित हो रहे है, तो उनका ही सामर्थ्य था। बाकी स्नेह निर्झर बह गया, रेत ज्यों तन रह गया।

दीपांकर पाण्डेय, सुपुत्र

***

चिराग सी रोशनी रखिये, मत सोचिये किसका घर रोशन हुआ। यही सोच पिता से हमने पाया और इसी मंत्र को जीवन आदर्श बना अब तक जीये और आगे भी प्रयासरत रहेंगी। पिता थे, उनकी ममता और प्यार को शब्दों की सीमा में बंधना दुष्कर है। नरम दिल के मालिक, रिश्तों को निभाना बखूबी जानते थे। उनका व्यवहार,जीवन संघर्ष, कठिन और विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल ढालने की कला, मेरे लिये सदैव प्रेरणादायक रहेंगी। सादर नमन!

वंदना पांडेय- छोटी सुपुत्री

***

जन्म के साथ मृत्यु का बड़ा ही सीधा और सहज संबंध है।जो आया है वो जाएगा। उसे जाने से कोई रोक नही सकता। पर कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनके समक्ष मृत्यु भी नतमस्तक हो जाती है। जी हाँ, मैं बात कर रही हूँ अपने बाबू जी की। जो अब हमारे बीच नही रहे। पर मैं जानती हूँ बाबू जी हमेशा जीवित रहेगें अपनी कृतियों में। वे जिंदा रहेगें उस यश में जिसे आज के कठिन समय में उन्होंने अर्जित किया। स्थितियाँ चाहे कितनी ही प्रतिकूल क्यों न रही हों पर उन्होंने अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नही किया। समाज अपनी स्मृतियों में उन्हें सदियों तक जीवित रखेगा। इसलिए मृत्यु को उनसे हारना ही होगा। नमन!

निशा पांडेय, छोटी बहू

***

राजनीतिक क्षेत्र में मैं छात्र जीवन से जुड़ा हुआ हूँ। इस दौरान हमें अनेक नेताओं से सम्पर्क का मौका मिला लेकिन जो आदर्श डाक्टर रत्नाकर पांडेय जी के द्वारा देखने को मिला, वह अन्यत्र कहीं नहीं मिला। डाक्टर रत्नाकर पांडेय जी निर्भीक उत्साहित और उच्च आदर्शों का पालन करने वाले व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे। मैंने इनके सानिध्य में रहते हुए यह महसूस किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि इनके जीवन में विशिष्ट और सामान्य जन में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं था सबको सर्वसुलभ थे और सबके दुःख दर्द और पीड़ा में सहयोग के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। ऐसे व्यक्ति सदियों में कोई एक पैदा होता है यह धरती पर प्रमाण है मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। सदैव का साथी-

राजेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी- समधी, चौबेपुर

***

स्वर्गीय डॉ रत्नाकर पांडेय यानी मेरे बाबा। वैसे तो वो मेरे मौसा जी के पिता जी थे। पर मेरे लिए वो मेरे दादा जी के ही समान थे, ईश्वर से प्रार्थना है बाबा की आत्मा को शांति प्रदान करे और जहाँ भी हो हमेशा अपना आशीर्वाद बनाये रखें। नमन!

शिवाकर चौबे

***

'विश्वास बड़ा है सपनों से' बाबूजी की सम्भवता पहली किताब थी, परंतु मेरे लिये तो ये स्लाइन गुरुमंत्र की तरह है, जिससे मुझे सदैव प्रेरणा मिलती रहती है। सपनों से ज्यादा अपने पर विश्वास करना, जिसकी डोर पकड़कर वो स्वयं गोला दीनानाथ की तंग गलियां से संसद के उचाईयों पर बैठ और अनवरत कर्मपथ पर चलते रहे।

यश-अपयश से परे बनाकर,अपना ही किरदार निभाकर

चला गया मिटा नहीं पर,हमारे अपने बाबूजी रत्नाकर।

डॉ० मंजू पांडेय, बड़ी बहू

***

पूर्व सांसद डाक्टर रत्नाकर पांडेय सही अर्थों में बड़े तो थे लेकिन खजूर के पेड़ की तरह नहीं बल्कि एक झुकी हुई डालियों वाले फलदार और छतनार वृक्ष की तरह थे, जो पथिक को छाया भी देता था और फल भी। रत्नाकर जी मेरे मित्र थे। ये मित्रता बाद में रिश्तेदारी में बदल गई। अमूमन ये देखने को मिलता है कि कद्दावर रिश्तेदार अपने से कम कद के सम्बन्धियों को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है पर रत्नाकर जी इसके ठीक उलट थे, कद्दावर तो थे पर रिश्तों को शिद्दत से निभाते थे। हर के लिए उनके हृदय में विशिष्ट स्थान रहता था। बाबा विश्वनाथ के वो केवल परम् भक्त ही नहीं थे बाबा के कुछ गुणों का कुछ समावेश भी उनमें था, शंकर के बारे में कहा जाता है कि समाज के त्याज्य और उपेक्षित वर्ग को अपने साथ रखकर महिमा मंडित करना उनका स्वभाव। कुछ ये उनके चरित्र में भी परिलक्षित होता है। बाबा विश्वनाथ अपने भक्त को अपने चरणों में स्थान दें, उनकी आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे।

पद्माकर चौबे- कमलाकर चौबे आदर्श सेवा विद्यालय,नाटी इमली

***

अपनी रचनाओं में वो जिंदा हैं , बाबू जी दुनिया से गये ही नही अतीत होते हुए भी अपनो के लिए वे वर्तमान है। क्यों न हो अपनो के लिए वे नेता नही मसीहा थे और मसीहा मरा नही करते। मैं उनकी स्मृतियो को नमन करते हुऐ श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

प्रभाकर चौबे

***

बाऊजी मेरे पिता समान थे। हमेशा उनसे मिल कर पिता का प्रेम प्राप्त हुआ। जब जब बनारस आते बिना मिले नही जाते थे। दिल्ली मे भी अक्सर टेलीफोन मे बात किया करते थे। सबका हालचाल लेते थे। किसी कारणवशअगर थोड़े वक्त तक फोन पर बात न हो पाती तो शिकायत भी करते कि, *"बहुत दिन बाद फोन कइलू, हालचाल लेत रहल कइली।"* वैसे तो उनका व्यक्तित्व बहुत बड़ा था, चाहे राजनीति के क्षेत्र में हो या शिक्षा के क्षेत्र मे, पर मेरे लिए हमेशा वो मेरे बाऊजी ही थे, जिन्होंने हमेशा पिता की तरह स्नेह किया। नमन!

नीरा चौबे

***

शिक्षा, साहित्य, राजनीति एवं परिवार इन सभी को एक साथ लेकर चलना अत्यंत कठिन होता है पर कुछ साधक ऐसे होते हैं जो असाध्य को भी साध लेते हैं और कुछ कार्य ऐसे कर जाते हैं जो अपने आप में मील का पत्थर साबित होता हैं। कुछ ऐसा ही कार्य हिंदी में स्वर्गीय डॉक्टर रत्नाकर पांडेय (दादा जी) ने कर दिखाया। जब भी मिलते सबका हाल चाल अवश्य पूछते थे। प्रार्थना है, भगवान श्री राम से, जिस तरह उन्होंने तुलसी दास जी को परम धाम का आशीर्वाद दिया उसी तरह इन्हें भी परम विश्राम एवम् परम धाम प्राप्त होने का आशीर्वाद प्रदान करें।

दिवाकर चौबे

***

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसे धरती माँ की गोद में नन्हा निर्जीव बीज समय की गति के विशाल वृक्ष बन जाता है, वैसे ही नाना जी गोद में खेलते खेलते आज हम रिसर्च स्कॉलर बन गयीं। जीवन में स्थिरता, दृढ़ संकल्प और सतत प्रयासरत रहने की प्रेरणा हमें नानाजी से ही मिली थी। सांस्कृतिक जुड़ाव, अपने अतीत का अहसास, अपने उज्ज्वल भविष्य की आशा हमारे पूर्वजों के आशीर्वाद से ही संभव है। नानाजी के पदचिन्हों पर अगर कुछ कदम भी चल पाई तो यही मेरी श्रद्धांजलि होगी।

भव्या पांडेय- नतिनि

***

मेरे दादा जी डॉक्टर रत्नाकर पाण्डेय बहुत अच्छे इंसान थे। उनसे अच्छे इंसान इस दुनिया में कोई नहीं होगा। वह हम लोग के जन्मदिन हो या फिर कोई भी त्यौहार हो उस पर हम लोग को फोन करते थे और पूछते थे कि तुम लोगों को क्या चाहिए? हमेशा वह ऐसे पूछते थे। मैं आपको बहुत दिल से याद कर रही हूँ। बाबा बहुत अच्छे थे।

शाम्भवी पांडेय-पौत्री

***

मेरे बाबा मेरे लिए आदर्श है। एक बार जब मैं अपने टीचर से पढ़ रहा था और वो आ गए और उन्होंने हमारे टीचर से कहा *'इसको ऐसे पढ़ाइये कि ये मुझसे बहुत आगे निकले और मुझसे भी अच्छी किताबे लिखे'*

शुभांकर पांडेय, पौत्र

***

बाबा के कंधे पर घूमा करते थे। आज उन्हें अपने कंधे के सहारे चलते देखा है। - श्रेयस्कर, पौत्र

***

बाबा की बिटिया और लल्ला बुलाने वाली आवाज़ की इतनी आदत हो गई थी कि जिस दिन वह आवाज नहीं आई, घर खाली-खाली लगता है।- जिज्ञासा, पौत्री

***

पारिवारिक चित्र-

नतिनी अनुभा (सुपुत्री डॉ० साधना उपाध्याय) के विवाहोत्सव पर स्व० डॉ० रत्नाकर पाण्डेय (बाएं से दूसरे स्थान पर बैठे हुए) के साथ पारिवारिक चित्र: साथ में हैं बाएं से डॉ० पद्माकर पाण्डेय एवं सबसे दाहिने बैठे हैं स्व० रामाश्रय पाण्डेय और पीछे प्रथम पंक्ति में सबसे बाएं खड़ी हैं बड़ी सुपुत्री डॉ० साधना उपाध्याय और अन्य परिवारजन।

पत्नी स्व० कुसुम पाण्डेय के साथ सांसद डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी

पौत्र के जन्मदिन पर परिवार के साथ रत्नाकर जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रद्धाभिव्यक्ति

विलक्षण प्रतिभा के यशश्वी युग पुरुष श्रेष्ठ मनुष्योचित गुणों से परिपूर्ण। अनुकरणीय श्रद्धेय डॉ. रत्नाकर पाण्डेय (चाचा जी) निर्भीक, एक बेबाक व्यक्तित्व, आदर्शवादी राज नेता और उन सबसे बढ़कर प्रखर लेखक थे। कांग्रेस पार्टी उनके लिए सर्वोपरि रही। उनकी बेबाक और ओजस्वी वक्तव्य शैली के प्रशंसक हर दल में रहे। मेरे लिये सौभाग्य की बात है कि मैने उनके सानिध्य में राजनीति का ककहरा सीखा तथा लगातार उनका आशीष और मार्ग दर्शन मिलता रहा। बहुत बिरले लोगों को ऐसा सौभाग्य प्राप्त होता है कि उन्हें ऐसा गुरु मिले, जो गुरुता के सम्पूर्ण सोपानो के श्रेष्ठतम अंशो का सम्मिश्रण हो। यह सौभाग्य मुझे और मेरे साथ ही साथ अन्य साथियों को मिला, जिन्हे डॉक्टर साहब जैसे प्रणेता के शिष्यत्व के बल पर जीवन पथ को प्रशस्त करने की प्रेरणा मिली। उनकी अनगिनत बातों का खजाना स्मृति में शेष है। उनकी स्मृति को शत्-शत् नमन। मैं उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

आनन्द चौबे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नतिनी अनुभा (सुपुत्री डॉ० साधना उपाध्याय) के विवाहोत्सव पर स्व० डॉ० रत्नाकर पाण्डेय (बाएं से दूसरे स्थान पर बैठे हुए) के साथ पारिवारिक चित्र: साथ में हैं बाएं से डॉ० पद्माकर पाण्डेय एवं सबसे दाहिने बैठे हैं स्व० रामाधव पाण्डेय और पीछे प्रथम पंक्ति में सबसे बाएं खड़ी हैं बड़ी सुपुत्री डॉ० साधना उपाध्याय और अन्य परिवारजन।

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा आयोजित 'जनसंपर्क एवं पत्रकारिता' विषयक सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला (29 जनवरी-04 फरवरी, 2011) के उदघाटन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि (बाएं से दूसरे) डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी

पत्नी स्व० कुसुम पाण्डेय के साथ सांसद डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी

जनसंपर्क एवं पत्रकारिता विषयक कार्यशाला के उदघाटन अवसर पर बाएं से दूसरे डॉ0 पाण्डेय जी

पौत्र के जन्मदिन पर परिवार के साथ रत्नाकर जी

तत्कालीन प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी के साथ सांसद डॉ० रत्नाकर पाण्डेय जी

तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा जी के साथ राजनेता रत्नाकर पाण्डेय

तत्कालीन मुख्यमंत्री, बिहार जगन्नाथ मिश्र के साथ सांसद रत्नाकर पाण्डेय जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri